इकाई 16 काव्य वाचन एवं विश्लेषण : माखनलाल चतुर्वेदी

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

16.3 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

16.4 उपयोगी पुस्तकें

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

माखनलाल चतुर्वेदी की चार कविताओं की विस्तृत व्याख्या समझ सकेंगी/सकेंगे;

- माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं की व्याख्या की दिशाओं को जान सकेंगे/सकेंगी;
- इन कविताओं के माध्यम से माखनलाल चतुर्वेदी की काव्यात्मक विशिष्टताओं को जान सकेंगी/सकेंगे;
- माखनलाल चतुर्वेदी की काव्य–भाषा को समझने का प्रयास कर सकेंगी/सकेंगे और
- माखनलाल चतुर्वेदी की शब्द–योजना और शब्दावली को जान सकेंगी/सकेंगे।

16.1 प्रस्तावना

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल, 1889 को हुआ था। वे मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के रहनेवाले थे। वे कवि, लेखक और पत्रकार थे। उन्होंने 'प्रभा' और 'कर्मवीर' नामक पत्रों का संपादन किया था। चतुर्वेदी जी राजनीतिक रूप से सक्रिय थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ कई आंदोलनों और कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी की। असहयोग आंदोलन में उन्हें जेल भी हुई। 'हिम किरीटिनी' नामक काव्य–संग्रह के लिए उन्हें उस समय का प्रतिष्ठित 'देव पुरस्कार' प्राप्त हुआ था। बाद में 'हिमतरंगिनी' के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए उन्हें 1963 में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया।उनकी मृत्यु 30 जनवरी, 1968 को हुई थी।

काव्य कृतियाँ

हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिनी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, बीजुरी काजल आँज रही, धूम्र वलय

गद्य कृतियाँ

कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पाँव, अमीर इरादे : गरीब इरादे

चयनित कविता

16.2 चयनित कविताओं का पाठ और विश्लेषण

एक

वरदान या अभिशाप?

कौन पथ भूले, कि आये !
स्नेह मुझसे दूर रहकर
कौन से वरदान पाये?

यह किरन–वेला मिलन–वेला
बनी अभिशाप होकर,
और जागा जग, सुला
अस्तित्व अपना पाप होकरय
छलक ही उट्ठे, विशाल !
न उर–सदन में तुम समाये।

उठ उसाँसों ने, सजन,
अभिमानिनी बन गीत गाये,
फूल कब के सूख बीते,
शूल थे मैंने बिछाये।
शूल के अमरत्व पर
बलि फूल कर मैंने चढ़ाये,
तब न आये थे मनाये–
कौन पथ भूले, कि आये?

(1919)

कठिन शब्द

किरन–वेला – सुबह, **उर–सदन** – हृदय–रूपी घर, **उसाँसों**– गंभीर साँस, **अभिमानिनी** – मान–मनौवल करानेवाली, **शूल** – काँटा, **बलि** – न्योछावर करना, अर्पित करना

सन्दर्भ और प्रसंग

'वरदान या अभिशाप?' शीर्षक कविता में माखनलाल चतुर्वेदी ने छायावादी रहस्य–भावना के अनुसार प्रणय–भाव को व्यक्त किया है।

व्याख्या

माखनलाल चतुर्वेदी ने छायावादी कविताएँ भी लिखी थीं। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़े रहे कवि ने प्रायः अपने राजनीतिक संघर्षों को कविताओं में जगह दी है। प्रस्तुत कविता में चतुर्वेदी जी ने छायावादी प्रवृत्तियों के अनुकूल प्रणय–भाव को व्यक्त किया है। इसमें मिलन की अपेक्षा विरह को महत्त्व दिया गया है। सामान्य प्रेम के बजाए आध्यात्मिक ढंग के प्रेम–संबंध को रहस्यात्मक तरीके से व्यक्त किया गया है।

हे मेरे स्नेह (प्रेम)! तुम तो मुझसे दूर चले गए थे! आज कौन–सा रास्ता भूल गए हो कि मेरे पास चले आए? मुझसे दूर रहकर तुम्हें कोई फायदा हुआ क्या? क्या कोई वरदान मिल गया?

प्रभात की इन किरणों में तुमसे मिलने की अनुभूति हो रही है। मिलन की यह बेला मानो मेरे लिए शाप बन गयी है क्योंकि संसार इन किरणों के आते ही जाग उठा है। विरह में मुझे मेरे अस्तित्व का एहसास था। वह अस्तित्व मानो खो गया है। तुम किरणों के विशाल पुंज होकर छलक उठे थे। मानो तुम सूरज बनकर आए थे! लेकिन मैं तुम्हें अपने हृदय में समा कर नहीं रख सका।

हे सजन! मेरी थकी हुई गहरी साँसों ने रूठ–रूठकर गीत गाए। तुम्हारी प्रतीक्षा में फूल तो कब के सूख चुके थे, इसलिए काँटों को बिछाने के सिवा मेरे पास कोई दूसरा उपाय नहीं था!

मैं काँटों के अमरत्व को जानता था इसलिए उनपर फूलों की बलि चढ़ा दी। उस समय मैंने तुम्हें मनाकर बुलाने की कोशिश की थी, मगर मनाने पर भी तुम नहीं आए। आज तुम आए हो तो यूँ लगता है कि रास्ता भूल कर आए हो!

काव्य सौष्ठव

- छायावादी प्रणय–भावना के अनुसार यह कविता रची गयी है।
- आध्यात्मिक स्पर्श होने के कारण इसमें रहस्यवाद का आंशिक पुट है।
- मिलन की अपेक्षा विरह को प्रधानता दी गयी है।

विशेष

रहस्यवादी भावनाओं से ओत–प्रोत इस कविता में प्रणय की अनुभूति को विरह की कसौटी पर खरा बताया गया है।

दो

एक तुम हो

गगन पर दो सितारे : एक तुम हो,

धरा पर दो चरण हैं : एक तुम हो,

'त्रिवेणी' दो नदी हैं! एक तुम हो,

हिमालय दो शिखर हैं : एक तुम हो,
रहे साक्षी लहरता सिंधु मेरा,
कि भारत हो धरा का बिंदु मेरा ।

कला के जोड़–सी जग–गुत्थियाँ ये,
हृदय के होड़–सी दृढ वृत्तियाँ ये,
तिरंगे की तरंगों पर चढ़ाते,
कि शत–शत ज्वार तेरे पास आते ।

तुझे सौगंध है घनश्याम की आ,
तुझे सौगंध भारत–धाम की आ,
तुझे सौगंध सेवा–ग्राम की आ,
कि आ, आकर उजड़तों को बचा, आ ।

तुम्हारी यातनाएँ और अणिमा,
तुम्हारी कल्पनाएँ और लघिमा,
तुम्हारी गगन–भेदी गूँज, गरिमा,
तुम्हारे बोल ! भू की दिव्य महिमा

तुम्हारी जीभ के पैंरो महावर,
तुम्हारी अस्ति पर दो युग निछावर ।
रहे मन–भेद तेरा और मेरा,
अमर हो देश का कल का सबेरा,
कि वह कश्मीर, वह नेपाल; गोवा;
कि साक्षी वह जवाहर, यह विनोबा,
प्रलय की आह युग है, वाह तुम हो,
जरा–से किंतु लापरवाह तुम हो।

(खण्डवा–1940)

सन्दर्भ और प्रसंग

राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को व्यक्त करने वाली काव्य–धारा के प्रमुख कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने प्रस्तुत कविता में प्रेरक बातें कही हैं। आज़ादी की लड़ाई में अपना सबकुछ न्योछावर कर देनेवाले सेनानियों को प्रेरित करते हुए कवि अनेक उत्साहवर्द्धक बातें कही हैं।

व्याख्या

'एक तुम हो' शीर्षक कविता में कवि ने स्वतंत्रता सेनानियों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कई रूपक गढ़े हैं। उन सेनानियों को सम्बोधित करते हुए वह कहता है कि आकाश में दो सितारे हैं जिनमें से एक तुम हो! अर्थात् तुम आकाश के चमकते सितारे की तरह महत्त्वपूर्ण हो! इसी तरह से कवि ने कुछ उपमाओं का उपयोग किया है, जैसे धरती पर दो चरण हैं, त्रिवेणी में दो नदियाँ हैं, हिमालय में दो शिखर हैं; इन सब में से एक तुम हो!

कवि कहता है कि मेरी इन बातों का गवाह लहराता हुआ समुद्र रहेगा और मेरी कामना है कि मेरा भारत देश धरती का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु बनकर रहे!

सांसारिक जटिलताएँ कला की भंगिमाओं की तरह होती हैं और उसकी प्रवृत्तियाँ मन के आवेगों की तरह! मैं चाहता हूँ कि तिरंगे की लहराती तरंगों पर चढ़ते हुए सैंकड़ों ज्वार तुम्हारे पास तक आएँ! इन सब के बावजूद तुम अपने पथ पर अडिग रहो!

आगे की पंक्तियों में कवि ने अपने साथ के स्वतंत्रता सेनानियों को कसम खिलाई है और आह्वान किया है कि तुम मेरी बातों पर गौर करो! वह कहता है कि तुम्हें घनश्याम ('मोहन' नाम होने के कारण गाँधी जी तरफ भी संकेत बनता है) की सौगंध है, तुम्हें धाम की तरह पवित्र भारत–भूमि की सौगंध है, तुम्हें गाँधी द्वारा बनाए गए सेवा–ग्राम की सौगंध है कि आओ और उजड़ते हुए अपने देश को बचाओ!

मैं मानता हूँ कि तुम्हें यातनाएँ दी गई हैं, मगर इन्हें अणुओं की तरह अत्यंत छोटा मान लेना चाहिए! हमारी कल्पनाएँ भले ही छोटी हों, मगर स्वतंत्रता की हमारी आवाज आकाश को चीर देनेवाली है। हमारी–तुम्हारी आवाज में गौरव और गरिमा का भाव है। आजादी के तुम्हारे बोल ही धरती की दिव्य महिमा हैं। वे इतने सुंदर हैं कि मानो तुम्हारी जिह्वा के चरणों का शृंगार महावर लगाकर किया गया हो! तुम्हारी कुर्बानी और महानता पर दो युगों को भी न्योछावर किया जा सकता है।

चतुर्वेदी जी की दूसरी कविताओं में भी आन्दोलन के अपने साथियों के साथ के मतभेदों पर बात की गयी है। यहाँ भी वे कहते हैं कि मेरा और तुम्हारा मन असहमतियों से भरा है। फिर भी हम आन्दोलन के साथी हैं। हम दोनों यही चाहेंगे कि हमारे देश का भविष्य उज्ज्वल हो, कल का सवेरा प्रकाश से भरा हो! कश्मीर, नेपाल, गोवा, नेहरू, विनोबा भावे के नाम लेकर कवि कहना चाहता है कि इन तमाम मुद्दों पर हमारे मतभेद ही नहीं मनभेद भी हो सकते हों; फिर भी देश का उज्ज्वल भविष्य हम सबकी प्राथमिकता है। यह युग तो प्रलय की तकलीफों से भरा है, मगर तुम इन सबसे देश को मुक्त करनेवाले हो! बस तुम्हारी कमी यही है कि तुम थोड़े लापरवाह हो!

कठिन शब्द

त्रिवेणी– इलाहाबाद में तीन नदियों का मिलन–स्थल (गंगा और यमुना के साथ अप्रकट सरस्वती नदी का मिलना), **जग–गुत्थियाँ** – सांसारिक जटिलताएँ, **वृत्तियाँ**– स्वभाव और आदतें, **घनश्याम**– संकेत मोहनदास करमचंद गाँधी की तरफ है, **भारत–धाम**– भारत देश, **सेवा–ग्राम**– वर्धा जिले में स्थित सेवाग्राम आश्रम, इसकी स्थापना महात्मा गाँधी ने की थी, **उजड़तों** – बर्बाद हो रहे लोग, **अणिमा**– सूक्ष्मता, **लघिमा**– लघुता, **गरिमा–** गम्भीरता, **बोल** – वाणी, **महावर** – पैरों में लगाया जानेवाला रंग, आलता, **अस्ति–** मौजूदगी, अस्तित्व, **दो युग**– चार युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग) में से दो युग, **मन–भेद**– वैचारिक मतभेद, **साक्षी**– गवाह, **जवाहर** – जवाहरलाल नेहरू, **विनोबा**– विनोबा भावे

काव्य सौष्ठव

- आन्दोलन के साथियों से मतभेद के बावजूद देश–हित में संघर्ष करने का संदेश इस कविता में निहित है।
- 19 मात्राओं की पंक्तियों से यह कविता रची गई है।

विशेष

राजनीतिक आन्दोलन के साथियों के बीच मतभेद हो सकते हैं। मगर सबका उद्देश्य एक ही होता है कि देश का हित हो!

तीन

बदरिया थम–थमकर झर री !
बदरिया थम–थमकर झर री !
सागर पर मत भरे अभागन
गागर को भर री !
बदरिया थम–थमकर झर री !

एक–एक, दो–दो बूँदों में
बँधा सिन्धु का मेला,
सहस–सहस बन विहँस उठा है
यह बूँदों का रेला।
तू खोने से नहीं बावरी,
पाने से डर री !
बदरिया थम–थमकर झर री!

जग आये घनश्याम देख तो,
देख गगन पर आगी,
तूने बूँद, नींद खितिहर ने
साथ–साथ ही त्यागी।
रही कजलियों की कोमलता
झंझा को बर री !
बदरिया थम–थमकर झर री !

सन्दर्भ और प्रसंग

वर्षा ऋतु की कुछ छवियों को इस कविता में पिरोने का प्रयास किया गया है। कवि ने बादलों को संबोधित करते हुए कहना चाहा है कि तुम अभावों का ख्याल करते हुए बरसो! प्रकृतिपरक कलेवर होने के बावजूद इस कविता में प्रगतिशील चेतना समाई हुई है।

कठिन शब्द

बदरिया– बादल, **अभागन** – प्रेम से दी गयी गाली कि तू भाग्यहीन है, **सहस–सहस** – सहस्र–सहस्र, हजार–हजार, **रेला** – कारवाँ, **बावरी–** प्रेम से दी गयी गाली कि तू पगली है, **खितिहर** – खेतिहर, किसान, **कजलियों** – कजली, काजल,**झंझा**– शोर करती हुई वायु, **बर** – वरण करना

व्याख्या

'एक भारतीय आत्मा' के नाम से प्रसिद्ध कविवर माखनलाल चतुर्वेदी ने बादलों को संबोधित करते हुए जो बातें इस कविता में कही हैं उनका आशय जन कल्याण से जुड़ता है। प्रकृति से जुड़ी यह कविता अंततः किसानी से जुड़ जाती है। प्रकृति से किसान का संबंध सबसे करीब का होता भी है। उसका पूरा जीवन प्रकृति के रूपों से प्रभावित होता रहता है।

कवि बादलों से बड़े प्रेम से कहता है कि ऐ बदरिया! थम–थमकर बरसो! एक ही बार जोर–शोर से मत बरसो! रुक–रुककर बरसो! ध्यान रखो कि जहाँ पानी की ज्यादा जरूरत है वहाँ बरसो! सागर पर बरसने से क्या फायदा! कवि स्नेहपूर्वक झिड़की देते हुए कहता है कि अरी अभागन! भरे–पूरे समुद्र पर बरस कर क्या करोगी? अच्छा तो यही है कि तुम खाली घड़ों को पानी से भर दो! ऐ बदरिया! रुक–रुककर और समझ–बूझकर बरसो!

तुम्हारी एक–एक बूँद से मिलकर बूँदों का मेला लग जाता है। यूँ लगता है मानो एक–एक, दो–दो बूँदों ने मिलकर समुद्र में बूँदों का मेला सजा दिया है। धीरे–धीरे जमा होकर इन बूँदों ने हजारों की संख्या बना ली है और ऐसा लगता है कि हँसती–मुस्कुराती बूँदों की एक बड़ी भीड़ जमा हो

गई है। कवि आत्मीयता के वशीभूत होकर पुनः बादलों को 'बावरी' कह बैठता है। उसे सलाह देता है कि तेरा निर्माण ही हुआ है बूँदों को खोने के लिए। तू पाने की आशा मत कर! पाने की इच्छा रखना तेरे व्यक्तित्व के लिए ठीक नहीं है! ऐ बदरिया! रुक–रुककर बरस!

तेरी बूँदों ने मानो घनश्याम को जगा दिया है। काले–काले बादल जागकर उड़ते चले जा रहे हैं या बरसकर विलीन होते जा रहे हैं। यह भी अर्थ हो सकता है कि रात का अंधेरा दूर हो गया है और सुबह होनेवाली है या बादलों के हटते ही सूरज चमक उठा। ऐसा लगा कि किसानों ने नींद को त्यागा और तुमने बूँदों को। अब तुम्हारी काजल–जैसी कोमलता बची रह गई है। मेरा विचार है कि अब तुम्हें झंझा का वरण कर लेना चाहिए और उसके साथ दूर तक उड़कर चले जाना चाहिए।

काव्य सौष्ठव

- बादलों को संबोधित इस कविता में मूल चिंता किसानी की है।
- यह प्रकृति–चित्रण की नई शैली है, जिसमें प्रकृति के बारे मे बात करते हुए मनुष्य की बेबसी को समाप्त करने की चिंता की जा रही है!
- इस कविता का स्वरूप गीतात्मक है।

विशेष

बादलों को संवेदनशीलता के साथ पुकारा जा रहा है कि तुम मनुष्य की लाचारी को समझो! वास्तव में ऐसा कहते हुए कवि का लक्ष्य है कि वह मानवीय पक्षों की महत्ता को स्थापित करे!

चार

ऊषा के सँग, पहिन अरुणिमा

ऊषा के सँग, पहिन अरुणिमा

मेरी सुरत बावली बोली –

उतर न सके प्राण सपनों से,
मुझे एक सपने में ले ले।
मेरा कौन कसाला झेले?
तेरे एक–एक सपने पर
सौ–सौ जग न्यौछावर राजा।
छोड़ा तेरा जगत–बखेड़ा
चल उठ, अब सपनों में खेलें?
मेरा कौन कसाला झेले?
देख, देख, उस ओर 'मित्र'की
इस बाजू पंकज की दूरी,
और देख उसकी किरनों में
यह हँस–हँस जय माला मेले।
मेरा कौन कसाला झेले?
पंकज का हँसना,
मेरा रो देना,
क्या अपराध हुआ यह?
कि मैं जन्म तुझमें ले आया
उपजा नहीं कीच के ढेले।
मेरा कौन कसाला झेले?
तो भी मैं ऊषा के स्वर में
फूल–फूल मुख–पंकज धोकर –
जी, हँस उठी आँसुओं में से
छुपी वेदना में रस घोले।
मेरा कौन कसाला झेले?
कितनी दूर?
कि इतनी दूरी!
ऊगे भले प्रभाकर मेरे,
क्यों ऊगे? जी पहुँच न पाता
यह अभाग अब किससे खेले?

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मेरा कौन कसाला झेले?

प्रातः आँसू ढुलकाकर भी

खिली पखुड़ियाँ, पंकज किलके,

मैं भाँवरिया खेल न जानी

अपने साजन से हिल–मिल के।

मेरा कौन कसाला झेले?

दर्पण देखा, यह क्या दीखा?

मेरा चित्र, कि तेरी छाया?

मुसकाहट पर चढ़कर बैरी

रहा बिखेरे चमक के ढेले,

मेरा कौन कसाला झेले?

यह प्रहार? चोखा गठ–बंधन!

चुंबन में यह मीठा दंशन।

'पिये इरादे, खाये संकट'

इतना क्या कम है अपनापन?

बहुत हुआ, ये चिड़ियाँ चहकीं,

ले सपने फूलों में ले ले।

मेरा कौन कसाला झेले?

रचनाकाल – 1935, 'हिम–तरंगिनी' (1957),

सन्दर्भ और प्रसंग

कवि ने प्रकृति की कुछ छवियों को रखते हुए अपनी स्थिति से तुलना की है। प्रकृति में अनेक सुंदर छवियाँ हैं, मगर कवि की वास्तविकता कठिनाइयों से भरी हुई है। यह कविता 'हिम तरंगिणी' मे संगृहीत है।

कठिन शब्द

अरुणिमा– सुबह की लाली, अरुण रंग, **सुरत** – ध्यान, चेतना, **बावली** – पगली, मतवाली, अपने ढंग की, **कसाला**– तीखा, कष्ट से भरा हुआ, कसैला, **मित्र** – सूरज, **पंकज**– कमल का फूल, **मेले**– मिला लेना, पहन लेना, **प्रभाकर** – सूरज, **किलके**– खुशी के कारण स्वतः निकला हुआ स्वर, **भाँवरिया**– फेरा देना, वृत्ताकार घूमना, **चोखा**– पक्का, **दंशन** – चुभन

व्याख्या

माखनलाल चतुर्वेदी कहते हैं कि ऊषा के साथ अरुणिमा आई है। सुबह हुई है और परिवेश अरुण वर्ण से रंजित है। यह सब देखकर कवि की चेतना का एक पक्ष मानो उद्विग्न हो उठता है। वह कहता है कि मेरे देखे हुए सपनों में से एक भी पूरा न हुआ। मेरे प्राणों को मानो शांति न मिली। मेरा अनुरोध है कि मुझे किसी एक सपने में शामिल कर लिया जाए! संसार मे चारों तरफ सपनों–सी सुंदरता फैली हुई है। लेकिन कवि को निराशा है। वह मान चुका है कि उसके कष्टदायक व्यक्तित्व को भला कौन इतना महत्त्व देगा! पूरी कविता कवि की 'सुरत बावली' के मुँह से कही गई है। कवि की उद्विग्न चेतना ही इस एकालाप को व्यक्त कर रही है।

छायावादी कलेवर में रची गई यह कविता प्रकृति और कवि की चेतना को मिश्रित रूप से व्यक्त कर रही है। कवि की चेतना प्रभात के सौंदर्य को संबोधित करती हुई कहती है कि तुम तो राजा हो! तुम्हारे एक–एक सपने पर सौ–सौ संसारों को न्योछावर किया जा सकता है। तेरा संसार न जाने कितने झंझटों से भरा हुआ है। चलो इन सब बातों को छोड़ देते हैं और सपनों में खेलते हैं। लेकिन मेरा सच मुसीबतों से भरा हुआ है, भला इन मुसीबतों के बीच सपनों के खेल कैसे खेलें!

कवि प्रकृति के एक और दृश्य को रखते हुए अपनी बात की पुष्टि कर रहा है कि सूरज और कमल के फूलों के बीच का संबंध कितना सुंदर है! सूरज और कमल के फूलों के बीच की दूरी कितनी ज्यादा है! मगर सूरज कमल को किरणों के माध्यम से कितने स्नेह से स्पर्श करता है और कमल के फूल मानो सूरज की किरणों को माला बनकर मिलने का उपक्रम कर रहे हैं। इस मनोरम दृश्य के बीच मेरे कसैले पक्ष को भला कौन सह पाएगा!

कमल के फूल हँस रहे हैं और मैं (कवि की 'सुरत बावली') रो रही हूँ। क्या मेरा रोना अपराध है? प्रकृति ने सबको जन्म दिया है, कमल को भी और मुझे भी! कमल का जन्म कीचड़ में हुआ लेकिन मेरा जन्म कीचड़ मे नहीं हुआ है। फिर भी, कवि की दीवानगी ऐसी है कि वह ऊषा के स्वर में स्वर मिलाकर न जाने कितने कोमल चेहरों को आँसुओं से धो चुकी है। वह दीवानगी न जाने कितने रोते हुए लोगों की वेदना में रस घोल चुकी है। इन सबके बावजूद मेरा सारा संदर्भ

कठिनाइयों से भरा हुआ है। इसलिए मेरा साथ निभा पाना आसान नहीं है। न जाने कितनी दूरी उत्पन्न हो चुकी है। मेरे जीवन के सूरज ने मुझसे लंबी दूरी बना ली है। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के झंझावातों ने मेरे जीवन को चुनौतियों से भर दिया है। इसलिए तेज प्रकाश लेकर निकला हुआ सूरज भी मेरे जीवन से दूर मालूम पड़ता है। मेरी अंतरात्मा उस सूरज को स्वाभाविक तरीके से अपना नहीं पाती है, क्योंकि मेरे संघर्षों का कसैलापन मेरा पीछा नहीं छोड़ता है।

प्रकृति को देखिए, वहाँ ऐसे दृश्य देखने को मिल जाते हैं कि ओस–रूपी आँसुओं को ढुलकाकर भी फूलों की पंखुड़ियाँ खिलती हैं और कमल के फूल पुलकित होते हैं। लेकिन कवि की चेतना वेदना से घिरी हुई है। वह चेतना कहती है कि मैं दुःख में ऐसी डूबी कि अपने साजन से हिल–मिलकर खेल खेलना सीख ही न सकी। पूरा जीवन मुसीबतों के जंजाल से घिरा रहा।

मैं आईना देख रही थी। मुझे उलझन हुई कि उसमें मेरा चित्र दिखा या तेरी छाया का आभास हुआ? यूँ लगा कि तुम्हारी मुस्कुराहट पर मेरे चित्र की उदासी ने कुछ चमकीले ढेलों को बिखेर दिया हो! मेरा और तुम्हारा रिश्ता बहुत गहरा है। हमारे और तुम्हारे बीच प्रहार का भी संबंध है और एक मजबूत बंधन भी है। यह सब ठीक उसी तरह से है जैसे चुंबन में मीठी चुभन शामिल हो! कहा जा सकता है कि हमने इरादों को पी लिया और संकटों को खा लिया। अपने इरादों को मानो भूल चुके हैं और संकटों को आत्मसात करके कसैले हो चुके हैं। क्या हमारे–तुम्हारे बीच का इतना अपनापन कम है? चलो, अब यह सब बहुत हो चुका। देखो, फिर से चिड़ियाँ चहकी हैं। उनके सपनों में फिर से फूल खिले हैं।

कवि कहना चाहता है कि प्रकृति की नवीनता एक शाश्वतता है और मनुष्य का जीवन लघुजीवी! प्रकृति नित–नूतन है और मनुष्य पुरानेपन की नियति से जुड़ा हुआ! इसलिए केवल मनुष्य अपने–आप में नवीन–नूतन नहीं है। प्रकृति ही उसका असली उल्लास है!

काव्य सौष्ठव

- यह कविता बताती है कि प्रकृति सबसे बड़ा सत्य है।
- मानव जीवन संघर्षों से घिर कर कसैला हो जाता है।
- मानव जीवन मे नूतनता की प्रेरणा प्रकृति से मिलती है।

विशेष

कविवर माखनलाल चतुर्वेदी ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि प्रकृति अद्‌भुत रूप से सुंदर है और मानव का जीवन संघर्षों से भर कर तीखा हो जाता है। इस संघर्ष को छोड़ा भी नहीं जा सकता। इसे आत्मसात करते हुए प्रकृति की तरफ प्रेरणा के लिए अवश्य जाना चाहिए, अन्यथा जीवन केवल रूखा–सूखा बचकर रह जाएगा!

बोध प्रश्न–1

1. 'वरदान या अभिशाप' कविता का मूल भाव क्या है ?

   .....
   .....
   .....

2. 'एक तुम हो' कविता में स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति किस प्रकार का भाव व्यक्त किया गया है?

   .....
   .....
   .....

3. 'बदरिया थम–थमकर झर री' शीर्षक कविता में किस आशय को प्रकट किया गया है?

   .....
   .....
   .....

4. 'ऊषा के सँग, पहिन अरुणिमा' कविता में किस तरह की वैचारिकी प्रस्तुत की गयी है?

   .....
   .....
   .....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

i. 'ऊषा के सँग, पहिन अरुणिमा' शीर्षक कविता किस पुस्तक में है?
   क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिनी ग) युगचरण घ) समर्पण

ii. 'वरदान या अभिशाप' किस पुस्तक में संगृहीत है?
क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिनी ग) युगचरण घ) मरण ज्वार

iii. 'वरदान या अभिशाप' शीर्षक कविता में कौन–सा भाव व्यक्त हुआ है ?
क) प्रयोगवादी ख) छायावादी ग) प्रगतिवादी घ) हालावादी

iv. माखनलाल चतुर्वेदी ने निम्नलिखित में से किस पत्रिका का संपादन किया था?
क)रूपाभ ख) मतवाला ग) हंस घ) प्रभा

v. माखनलाल चतुर्वेदी को किस उपनाम से जाना जाता है?
क) महाप्राण ख) संपादकाचार्य ग) एक भारतीय आत्मा घ) राष्ट्रकवि

vi. 'हिम तरंगिनी' काव्य–संग्रह का प्रकाशन कब हुआ था?
क) 1953 ख) 1957 ग) 1955 घ) 1965

vii. 'एक तुम हो' कविता में कितनी मात्राओं की पंक्तियों का उपयोग हुआ है ?
क) 21 ख) 24 ग) 16 घ) 19

viii. माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म कब हुआ था?
क) 1880 ख) 1896 ग) 1889 घ) 1898

ix. माखनलाल चतुर्वेदी की मृत्यु कब हुई थी?
क) 1961 ख) 1975 ग) 1964 घ) 1968

x. माखनलाल चतुर्वेदी को किस पुस्तक के लिए 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला था?
क) हिम किरीटिनी ख) हिम तरंगिनी ग) युगचरण घ) समर्पण

16.3 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न–1

1. छायावादी प्रणय–भावना के अनुसार यह कविता रची गयी है। आध्यात्मिक स्पर्श होने के कारण इसमें रहस्यवाद का आंशिक पुट है। मिलन की अपेक्षा विरह को प्रधानता दी गयी है।
2. 'एक तुम हो' शीर्षक कविता में कवि ने स्वतंत्रता सेनानियों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कई रूपक गढ़े हैं। उन सेनानियों को सम्बोधित करते हुए वह कहता है कि आकाश में दो सितारे हैं जिनमें से एक तुम हो! अर्थात् तुम आकाश के चमकते सितारे की तरह महत्त्वपूर्ण हो! इसी तरह से कवि ने कुछ उपमाओं का उपयोग किया है, जैसे धरती पर दो चरण हैं, त्रिवेणी में दो नदियाँ हैं, हिमालय में दो शिखर हैं य इन सब में से एक तुम हो!
3. बदरिया थम–थमकर झर री' शीर्षक कविता में वर्षा ऋतु की कुछ छवियों को पिरोने का प्रयास किया गया है। कवि ने बादलों को संबोधित करते हुए कहना चाहा है कि तुम अभावों का ख्याल करते हुए बरसो! प्रकृतिपरक कलेवर होने के बावजूद इस कविता में प्रगतिशील चेतना समाई हुई है।

4. 'ऊषा के सँग, पहिन अरुणिमा' शीर्षक कविता में कवि कहना चाहता है कि प्रकृति की नवीनता एक शाश्वतता है और मनुष्य का जीवन लघुजीवी! प्रकृति नित–नूतन है और मनुष्य पुरानेपन की नियति से जुड़ा हुआ! इसलिए केवल मनुष्य अपने–आप में नवीन–नूतन नहीं है। प्रकृति ही उसका असली उल्लास है! कविवर माखनलाल चतुर्वेदी ने इस कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि प्रकृति अद्‌भुत रूप से सुंदर है और मानव का जीवन संघर्षों से भर कर तीखा हो जाता है। इस संघर्ष को छोड़ा भी नहीं जा सकता। इसे आत्मसात करते हुए प्रकृति की तरफ प्रेरणा के लिए अवश्य जाना चाहिए, अन्यथा जीवन केवल रूखा–सूखा बचकर रह जाएगा!

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–2

i. ख
ii. क
iii. ख
iv. घ
v. ग
vi. ख
vii. घ
viii. ग
ix. क
x. ख

16.4 उपयोगी पुस्तकें

1. माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली – सम्पादक – श्रीकांत जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली